नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

वक्फ बिल ; धार्मिक भावनाओं को भड़कने से बचें

वक्फ बोर्ड संशोधन विधेयक लोकसभा के बाद गुरुवार को राज्यसभा में भी पारित हो गया. जाहिर है राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बाद यह बिल कानून बन जाएगा. वक्फ बिल का विरोध करने वाले सांसद, राजनीतिक दल और सामाजिक, धार्मिक संगठन यह बताने में विफल रहे हैं कि इस बिल का संशोधन गैर संवैधानिक और किसी धर्म विशेष के अधिकार में हस्तक्षेप क्यों और कैसे है? वक्फ बोर्ड कानून में अनेक बार संशोधन हो चुके हैं. कोई भी संशोधन संसद की मंजूरी के बाद ही कानून का रूप लेता है.ऐसे में यह कैसे कहा जा सकता है कि मौजूदा सरकार संशोधन करके संविधान विरोधी काम कर रही है? जहां तक धार्मिक हस्तक्षेप का प्रश्न है तो दुनिया के 57 मुस्लिम देशों में से 53 मुस्लिम देशों में वक्फ बोर्ड जैसी कोई संस्था नहीं है. यह संस्था केवल भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में ही है, जहां मुगल सल्तनत थी और जहां अंग्रेजों ने राज किया.

दरअसल, 12 वीं सदी में दिल्ली सल्तनत के समय वक्फ मजलिस की सबसे पहले स्थापना हुई. इसे 1935 में अंग्रेजों ने संस्थागत कानूनी रूप दिया. हमारी संविधान सभा ने 1935 के ब्रिटिश एक्ट के इस वक्फ कानून को खारिज कर दिया. यानी हमारे मूल संविधान में वक्फ कानून था ही नहीं. आजादी के बाद 1954 में पहली बार वक्फ एक्ट बना और फिर साल 1995 में इस एक्ट में कुछ संशोधन किए गए. डॉ मनमोहन सिंह के समय फिर नया वक्फ एक्ट बना और इसमें साल 2013 में भी कई बदलाव किए गए.

यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि यूपीए सरकार के समय 2006 की जस्टिस सच्चर कमेटी की रिपोर्ट की सिफारिशों के आधार पर ही गुरुवार को पारित एक्ट में अधिकांश बदलाव किए गए हैं. सबसे बड़ी बात यह है कि सुप्रीम कोर्ट ने वक्फ बोर्ड को धार्मिक संस्था नहीं बल्कि धार्मिक संपत्ति का प्रबंध करने वाली संस्था माना है. बहरहाल, नए बिल के कानून बन जाने के बाद वक्फ की संपत्ति का विवाद सुलझाने में अब राज्य सरकारों को पहले से अधिक शक्तियां हासिल होंगी. हालांकि प्रस्तावित कानून का असर पुरानी मस्जिदों, दरगाहों या मुसलमानों के धार्मिक संस्थानों पर नहीं पड़ेगा. दरअसल, 2013 के वक्फ एक्ट में कई विसंगतियां थी. उसमें प्रावधान था कि वक्फ संपत्तियों के विवाद केवल वक्फ ट्रिब्यूनल में ही सुलझाए जा सकते हैं. ट्रिब्यूनल के फैसले को अंतिम माना जाएगा. इसे सुप्रीम कोर्ट में भी चुनौती नहीं दी जा सकती. यही वह प्रावधान था जिसका लंबे समय से दुरुपयोग हो रहा था.

स्थिति यह थी कि भारतीय संसद भवन, ताज महल और कोलकाता एयरपोर्ट को भी वक्फ की संपत्ति घोषित कर दिया गया था. जाहिर है कोई भी संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य इस तरह की विसंगतियों को लंबे समय तक बर्दाश्त नहीं कर सकता था. इसलिए इसमें बदलाव किए गए हैं. प्रधानमंत्री मोदी की सरकार द्वारा 2023 में प्रस्तुत विधेयक को जेपीसी में 6 महीने तक विचार के लिए रखा गया. इस दौरान देश भर के सभी मुस्लिम संगठनों ने अपनी राय दी है. इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि इस विधेयक को जल्दबाजी में लाया गया. संसद में पारित प्रत्येक कानून के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील की जा सकती है.

जाहिर है विरोध करने वाले सुप्रीम कोर्ट जाने के लिए स्वतंत्र हैं. बहरहाल, अब जब यह बिल कानून बनने जा रहा है तो सभी राजनीतिक दलों, सभी पक्षों के धार्मिक नेताओं और सामाजिक संगठनों को चाहिए कि भड़काऊ बयान बाजी बंद करे. देश के लिए यही अच्छा है कि विधायिका और न्यायपालिका को अपना काम करने दिया जाए.

संशोधन बिल दोनों सदन से पारित

अब वक्फ में लूट की छूट बंद

दिलीप झा

दोनों सदन से वक्फ संशोधन बिल 2025 पास होने के बाद यह स्पष्ट हो गया कि अब वक्फ में लूट की छूट हमेशा के लिए बंद हो गई और वे मनमानी नहीं कर पाएंगे क्योंकि इससे पूर्व पूरे देश में वक्फ बोर्ड के क्रियाकलापों से पसमांदा मुस्लिम समाज के लोग भी आहत थे।? वक्फ की प्रॉपर्टी में करोड़ों अरबों की गड़बड़ी की बात वर्षों से हो रही थी और यह बात सभी दलों के नेताओं को मालूम है। लेकिन वे वक्फ बोर्ड में संशोधन को लेकर दृढ़ संकल्पित नहीं थे। क्योंकि उन्हें डर था कि बोर्ड की मनमानी पर अंकुश लगाने से मुस्लिम वोटबैंक उनसे खिसक न जाए। हालांकि वर्ष 2014 में नरेंद्र मोदी की केंद्र में सरकार आने के बाद वक्फ बोर्ड को यह अहसा जरूर हो गया था कि बीजेपी के शासनकाल में उनकी ज्यादती बहुत दिन तक नहीं चलने वाली है।

लोकसभा में बुधवार को पास होने के बाद अल्पसंख्यक कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने गुरुवार दोपहर एक बजे राज्यसभा में पेश किया और इस पर चर्चा की शुरुआत हुई। इस दौरान सत्ता पक्ष और विपक्ष के नेताओं ने वक्फ संशोधन बिल के संदर्भ में अपने विचारों को रखा। वहीं, सरकार ने स्पष्ट किया कि वक्फ संशोधन बिल पर जेपीसी ने एक करोड़ से अधिक सुझावों को शामिल किया गया। मंत्री किरेन रिजिजू ने राज्यसभा में जवाब देते हुए कहा कि इस बिल को सर्वसम्मति से पास कराने की अपील करता हूं। 12 घंटे की बहस के बाद इस पर वोटिंग की प्रक्रिया शुरू हुई।? इस दौरान आरजेडी के मनोज झा, एनसीपी की फौजिया खान एवं कांग्रेस के नासिर हुसैन के संशोधन प्रस्ताव खारिज हो गए। वक्फ संशोधन बिल के पक्ष में 125 और इसके खिलाफ में 95 आंकड़े थे। राज्यसभा में वोटिंग के बाद एनडीए को बिल में संशोधन के लिए बहुमत का 119 आंकड़े चाहिए था। नरेंद्र मोदी की नेतृत्व वाली एनडीए सरकार ने राज्यसभा से भी वक्फ संशोधन बिल को पारित करवा कर यह सिद्ध पकर दिया कि गठबंधन दल उनके साथ एकजुट है। वक्फ संशोधन बिल के पक्ष में 128 और विपक्ष में 95 मत पड़े। इस तरह से राज्यसभा में भी विपक्ष का संशोधन प्रस्ताव गिर गया। दरअसल, वक्फ बोर्ड संशोधन विधेयक पर सरकार की मंशा सही है। हमें यह भी स्वीकार करना चाहिए कि इस बिल के पास होने से करोड़ों पसमांदा मुसलमानों के जीवन में व्यापक बदलाव आएगा। इस बोर्ड में अब पसमांदा मुसलमानों को जोड़ दिया गया है। अभी तक उन्हें इस बोर्ड से दूर रखा गया था। जबकि बिहार, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र समेत कई राज्यों में पसमांदा मुस्लिम बहुल ज्यादा संख्या में हैं। पसमांदा का एक फारसी शब्द है और इसका अर्थ होता है पीछे छूट गए लोग। उनके पीछे रहने की वजहों में से एक बड़ा कारण मुसलमानों में भी जाति व्यवस्था बताई जाती है।

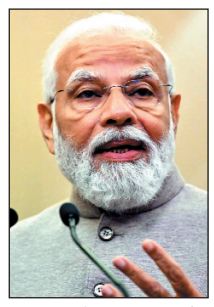

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश के कुल मुस्लिम वोटबैंक में 85 फीसदी शेयर वाले पसमांदा समाज को साधने के लिए बड़ा दांव चल दिया है। उन्होंने भोपाल में वर्ष 2023 में विधानसभा चुनाव के दौरान सभा को संबोधित करते हुए कहा था कि पसमांदा मुसलमानों को वोटबैंक की राजनीति करने वालों ने जीना मुश्किल करके रखा हुआ है। उनको तबाह करके रखा है। उसी समय पीएम मोदी ने तय कर लिया था कि कमजोर और सताए मुसलमानों के जीवन में कैसे सुधार लाएंगे और कहां से उनके लिए फंड की व्यवस्था होगी। मोदी ने 2029 के आमचुनाव की तैयारी को देखते हुए राजनीतिक शतरंज की बड़ी चाल चल दी है, इसलिए विपक्षी पार्टियों में जबरदस्त बौखलाहट है। पूरे देश में 19.3 फीसदी मुसलमान हैं और लोकसभा की 49 सीटों पर उनकी निर्णायक भूमिका होती है क्योंकि इन सीटों पर 15 से 20 फीसदी मुस्लिम हैं। वर्ष 2019 में 5 फीसदी मुस्लिमों ने बीजेपी को वोट किया था जो 2024 में बढ़कर 12 फीसदी हो गया। जाहिर है चुनाव में जीत के जादूगर मोदी ने वक्फ संशोधन बिल दोनों सदनों से पारित करवा कर बहुत बड़ा राजनीतिक मास्टर स्ट्रोक लगा दिया है।

(लेखक नवभारत भोपाल के संपादक हैं)

व्यापार के मामले में मित्र देश, शत्रु से भी ज्यादा बदतर हैं

आखिर फूट गया अमेरिका का टैरिफ बम...!

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने आखिरकार दुनिया पर टैरिफ बम फोड़ दिया. व्हाइट हाउस ने इस दिन को मुक्ति दिवस यानी लिबरेशन डे कहा है. इस मौके पर ट्रंप ने कहा कि भारत के मामले में निर्णय मुश्किल रहा. प्रधानमंत्री मोदी हाल ही में यहां आए थे. वो मेरे अच्छे दोस्त हैं. अमेरिका ने भारत पर 26% टैरिफ लगाया है, जबकि हम अमेरिकी सामान पर औसतन 52 फीसदी का टैरिफ लगाते हैं. इस तरह देखा जाए, तो अमेरिकी राष्ट्रपति ने भारत पर हमारे मुकाबले आधा टैक्स ही लगाया है और इसे डिसकाउंटेड टैक्स कहा है. अमेरिका ने यही टैक्स चीन पर 34%, यूरोपीय यूनियन पर 20%, साउथ कोरिया पर 25%, जापान पर 24%, वियतनाम पर 46% और ताइवान पर 32% लगाया है. इसके साथ ही दूसरे देशों से अमेरिका में आने वाले सभी सामान पर 10त्न बेसलाइन (न्यूनतम) टैरिफ लगेगा. बेसलाइन टैरिफ 5 अप्रैल को और रेसिप्रोकल टैरिफ 9 अप्रैल की रात 12 बजे से लागू होंगे. बेसलाइन टैरिफ व्यापार के सामान्य नियमों के तहत आयात पर लगाया जाता है, जबकि रेसिप्रोकल टैरिफ किसी अन्य देश के टैरिफ के जवाब में लगाया जाता है. 8 अप्रैल के बाद से अमेरिका विदेशों में बनने वाले वाहनों पर 25% टैरिफ लगाएगा. अब तक अमेरिका अन्य देशों से मोटरसाइकिलों पर केवल 2.4% टैरिफ वसूलता था. जबकि भारत 60%, वियतनाम 70% और अन्य देश इससे भी अधिक कीमत वसूलते हैं. ट्रंप का मानना है कि दुनिया के ज्यादातर देशों ने अमेरिका को 50 वर्षों तक लूटा है, जिसे वह खत्म करने की शुरुआत कर चुके हैं. हालांकि अमेरिका आज भी दुनिया की सबसे बड़ी इकोनामी है, लेकिन ट्रंप के मुताबिक अतीत में अमेरिकी हुक्मरानों की गलत नीतियों के कारण अमेरिका दुनिया का सबसे बड़ा कर्जदार देश बन गया है, लेकिन अब अमेरिका अमीर बनेगा, दुनिया में सबसे अमीर देश. हम अमेरिका फर्स्ट को लागू कर रहे हैं, हम वास्तव में बहुत धनवान हो सकते हैं

इसके पीछे औद्योगिक रणनीति

वैसे अमेरिका सिर्फ अपने व्यापार घाटे को कम करने के लिए ही टैरिफ बम का सहारा नहीं ले रहा, बल्कि इसे एक औद्योगिक रणनीति के तौरपर भी आजमाना चाहता है. यही वजह है कि अमेरिका ने कहा है कि अगर कोई कंपनी टैरिफ से छूट चाहती है, तो उसे अमेरिका में अपना प्रोडक्ट बनाना होगा. इससे न केवल अमेरिकियों को रोजगार मिलेगा, बल्कि इस टैरिफ बम से अमेरिका का नए सिरे से औद्योगिक विकास भी होगा. नौकरियां और कारखाने अमेरिका लौटेंगे. ट्रंप का मानना है कि कई देशों ने अमेरिकी बाजार का फायदा लेकर खुद को समृद्ध बनाया, लेकिन अमेरिकी सामान के लिए अपने बाजार में सख्ती लगा दी है. अब ऐसा नहीं चलेगा. अब अमेरिका भी अपने फायदे के बारे में सोचेगा. इसका सबसे बड़ा शिकार कंबोडिया हुआ है. अमेरिका अब कंबोडिया से आयातित वस्तुओं पर 49 फीसदी और चीन से आयात होने वाले सामान पर 34 फीसदी शुल्क वसूलेगा. अमेरिकी राष्ट्रपति इसे अपना एक कठोर निर्णय मानते हैं, लेकिन वह यह भी कहते हैं कि उनके पास इसका कोई विकल्प भी नहीं था. उनके मुताबिक व्यापार के मामले में मित्र देश, शत्रु से भी ज्यादा बदतर हैं.

-नौशाबा परवीन

मंदी के आसार महंगाई भी बढ़ेगी

अमेरिका की प्रतिष्ठित येल यूनिवर्सिटी का मानना है कि इस टैरिफ बम के चलते अमेरिका पर मंदी के 35 फीसदी आसार गहरा गए हैं. क्योंकि इस टैरिफ बम के कारण हर अमेरिकी परिवार पर करीब 35 हजार रूपये सालाना महंगाई का बोझ बढ़

जाएगा. लेकिन इस टैरिफ बम के फोड़े जाने के बाद से अमेरिका के सरकारी खजाने में 46 लाख करोड़ रूपये का इजाफा होगा. अमेरिकी सरकार संपन्न होगी, लेकिन इस बम के नतीजे से अमेरिकी नागरिकों की क्रयशक्ति में कमी आएगी. जहां तक भारत की बात है, तो हम पर इससे करीब 35 अरब रूपये का बोझ बढ़ेगा. हालांकि इससे भारत को फायदा भी हो सकता है. भारत का जिन 10 देशों के साथ सबसे ज्यादा व्यापार है, उनमें से अकेले अमेरिका ही वह देश है, जिसके साथ हमारा व्यापार फायदे में हैं. बाकी सब देशों के साथ हमारा व्यापार घाटे में हैं. अमेरिका ने जिस तरह से टैरिफ बढ़ाया है, उसे देखते हुए चीन भारत से ज्यादा आयात की सोच रहा है.

अब उपलब्ध होगी ई-बाइक टैक्सी

महाराष्ट्र के 1,00,000 से अधिक आबादी के शहरों में ई-बाइक टैक्सी सेवा को राज्य सरकार ने अनुमति दी है. पहले सिर्फ गोवा में मोटर साइकिल टैक्सी थी, लेकिन अब रमानाथ झा समिति की सिफारिश के अनुसार राज्य में ई-बाइक टैक्सी को मान्यता दी गई है. बेंगलुरू में भी ऐप आधारित टू व्हीलर टैक्सी चल पड़ी हैं. इस तरह की टैक्सी की उपयोगिता यह है कि संकरे और भीड़ भरे रास्ते पर भी यह अपना मार्ग सुगमता से बना लेती है. इसका सफर किफायती होता है और कुछ किलोमीटर की दूरी के लिए सुविधाजनक होती है. पुणे जैसे शहर में, जहां सड़कें कम चौड़ी हैं, वहां इसका चलन बढ़ा है. इसमें चालक और पीछे बैठे प्रवासी दोनों को हेलमेट लगाना जरूरी है. ई-बाइक से राज्य के हजारों युवाओं को रोजगार का साधन मिल जाएगा. अभी टू व्हीलर वाले युवा गिग वर्कर के तौर पर झोमेटो, स्विगी आदि के लिए सेवा देते हैं. खाद्य सामग्री या ऑनलाइन मंगाए सामान घरों तक पहुंचाते हैं, लेकिन ई-बाइक से उन्हें यात्री सेवा की सुविधा मिल जाएगी. ई-बाइक योजना की शर्त है कि कम से कम 50 आवेदक एक साथ आने पर इस टैक्सी सेवा की अनुमति दी जाएगी. इसके अलावा यात्री की सुरक्षा, हेलमेट का इस्तेमाल और महिला सुरक्षा का ध्यान रखना होगा. यद्यपि यह सेवा सस्ती होगी फिर भी आरटीओ से इसकी किराया दर निश्चित करनी होगी. आटो रिक्षा के समान पीली नंबर प्लेट, बैज लगाने की अनिवार्यता तथा पुलिस की जांच-पड़ताल भी ई-बाइक टैक्सी के लिए लागू होगी. यह भी संभव है कि आटोचालक संगठन इसके खिलाफ आंदोलन करें. क्योंकि ई-बाइक टैक्सी कम खर्च में यात्रियों को ले जाएगी. किफायती दर स्पष्ट नियमों और खुली प्रतिस्पर्धा के अलावा कुशल सेवा से ई-बाइक सेवा लोकप्रिय हो सकती है. छात्रों या अकेले व्यक्ति के लिए यह प्रवास का सुगम साधन होगा.

निशानेबाज

25 घंटे भाषण देने का रिकार्ड ऐसे वक्ता को मिलना चाहिए अवार्ड

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, वक्ता को वक्त की मर्यादा का ध्यान रखना चाहिए और नपे-तुले शब्दों में सटीक तरीके से अपनी बात रखनी चाहिए. बड़बोलापन अच्छी बात नहीं है. बुद्धिमान व्यक्ति हमेशा तोल-मोल कर बोलते हैं और संक्षेप में अपनी बात रखते हैं.

हमने कहा, वह वक्ता ही क्या जो वक्त की पाबंदी माने! बोलने में कंजूसी नहीं करनी चाहिए. वचनेषु किं दरिद्रता ! जो भी बोलो, खुलकर बोलो, डंके की चोट पर बोलो. कितने ही प्लीडर बोलते-बोलते लीडर बन जाते हैं. कहा गया है-10,000 लोगों में कोई एक वक्ता होता है, जो धाराप्रवाह भाषण देता है. बोलना आसान नहीं है. अच्छी और प्रभावशाली वक्तृत्वकला इने-गिने लोगों में होती हैं. वक्ता के लिए माइक एक खिलौना होता है.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, यह बात इसलिए चली, क्योंकि अमेरिकी सीनेटर कोरी बुकर ने सीना तानकर लगातार नॉन स्टॉप 25 घंटे तक भाषण दिया. वे इस दौरान बाथरूम तक नहीं गए, जिसे अमेरिका में रेस्टरूम कहा

जाता है. उन्हें रेस्ट या आराम लेना ही नहीं था. 55 वर्ष के कोरी बुकर पुराने एथलीट या क्रीड़ापटु रहे हैं. इस रिकार्डतोड़ लंबे भाषण से आप उनकी ऊर्जा का अंदाजा लगा सकते हैं.

हमने कहा, पं. नेहरू के शासनकाल में उनके विदेशमंत्री वीके कृष्णमेनन ने भी ऐसा ही रिकार्ड बनाया था. यूएन जनरल असेंबली में कश्मीर मुद्दे पर

पाकिस्तान और पश्चिमी देशों को खरी-खोटी सुनाते हुए कृष्णमेनन ने लगातार 16 घंटे का भाषण दिया था. सिर्फ बीच-बीच में वे काली कॉफी का घूंट पी लिया करते थे. तत्कालीन अमेरिकी विदेशमंत्री जॉन फॉस्टर डलेस से मेनन की जमकर बहस हुआ करती थी. बुकर ने भी अपने लंबे भाषण में प्रेसीडेंट ट्रंप और उनके अलोकतांत्रिक आदेशों की भरपूर खिंचाई की. अच्छे वक्ताओं के पास तथ्यों और तर्कों की कमी नहीं होती. जब उन्हें 2 शब्द बोलने के लिए मंच पर बुलाया जाता है, तो वो 2 लाख शब्द बोलने पर उतर आते हैं. उनके दिमाग और जुबान में कोई थकावट नहीं आती. जिस तरह लंबी मैराथन दौड़ होती है, वैसा ही मैराथन स्पीच भी होता है. कुशल वक्ता अच्छे-अच्छों का तख्ता हिलाकर रख देता है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11863 - डॉ. सागर खादीवाला

ऊपर से नीचे
1. घास कपड़े आटे या मिट्टी आदि का बना हुआ मनुष्य का आकार या मूर्ति, बुत, प्रतिमा 2. रह-रहकर होने वाली पीड़ा, टीस 3. सिहरन, कंपकंपी, थर्राहट, डर, भय 4. भय, खौफ 5. मतवालापन, मस्त होने का भाव 9. यदि ऐसा है ही, अगरचे (सं.) 11. किशमिश बादाम आदि सुखाए हुए बढ़िया फल 12. आज्ञा 14. अफवाह, बदनामी, कोलाहल (सं.) 15. पूरी निष्ठा के साथ कार्य करने का गुण 16. असभ्यता, जंगलीपन, पागलपन 18. कष्ट, पीड़ा 20. छोटा या पतला नल, बंदूक का अगला भाग 21. अल्प, थोड़ा.

बायें से दायें
1. कुबेर का विमान जिसे रावण ने छीन लिया था, फूल (सं.) 3. सदा, सदैव, हमेशा 6. परामर्श, राय 7. हाथी, अस्तित्व, व्यक्तित्व 8. योग्य, उचित, समर्थ 10. रमा के पति, विष्णु 13. वायु द्वारा उत्पन्न (सं.) 15. भारतीय क्रिकेट टीम के एक भूतपूर्व आलराउंडर कप्तान 17. समकालीन राजाओं में सबसे बड़ा, फिल्म उमरावजान के गीतकार 19. टीस, चसक, तबला-मृदंग आदि की ध्वनि 22. तुम्हारा (सं.) 23. शिक्षा 24. कड़कड़ाते हुए घी या तेल में डाल कर पकाना

Solution 11862

वि	कृ	त	■	वि	नि	म	य
प्र	ति	मा	■	धा	■	सा	की
ला	■	शा	स	न	■	न	न
प	र्व	■	मा	■	म	■	■
■	■	अ	ज	ग	र	■	ह
फु	ल	का	■	■	ना	वि	क
ला	■	र	स	द	■	मा	ला
ना	■	थ	र	■	बि	ता	ना

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में अध्ययन में रूचि रहेगी. मित्र तथा भाईयों का सहयोग मिलेगा. वर्ष के मध्यमें व्यापार मेंसफ्लता मिलेगी. शासन सत्ता से सुख प्राप्त होगा. वर्ष के अन्त में आजीविका के क्षेत्र में भागदौड़ करना होगी. शासन सेसुख प्राप्त होगा. जमीन जायजाद के मामलों में व्यस्तता रहेगी. पारिवारिक स्थिति सामान्य रहेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शासन से लाभ प्राप्त होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी. मांगलिक कार्य होंगे. कर्क राशि के व्यक्तियोंको विशेष सहयोग रहेगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को भोग विलास मेंव्यय होगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को निजी कार्यों में लगना होगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को साहस पराक्रम बना रहेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियोंको सहयोग आर्थिक लाभ देगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वाभाव से चंचल, मिलनसार होगा, ईश्वर तथा गुरूजनों का भक्त होगा, संतान की संख्या अधिक होगी, लेखन, एवं साहित्य का संग्रह करेगा, नौकरी में विशेष तरक्की होगी, माता पिता को सुखी रखेगा.

मेष- जटिल कार्य सहज में ही पूरे होंगे, जिम्मेदारी आने से व्यस्तता बढ़ जायेगी, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, आय का नया साधन उपलब्ध हो सकता है.

वृषभ- अनुभवी लोगों की सलाह से लाभ होगा, घर की साज सज्जा पर खर्च होगा, श्रम एवं प्रयास करने से सफ्लता मिलेगी, पारिवारिक कार्यों में अधिकता रहेगी.

मिथुन- विरोधी खुलकर विरोध कर सकते हैं, मित्रों की उपेक्षा न करें, कोई मूल्यवान वस्तु प्राप्त हो सकती है, अधिकारियों का सहयोग रहेगा.

कर्क- भावनात्मक सम्बन्धों में चल रहा गतिरोध दूर होगा, रोजगार के अवसर मिलेंगे, जारी प्रयासों में सफ्लता मिलेगी, संतान के दायित्वों की पूर्ति होगी.

सिंह- खानपान की लापरवाही से स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, अधिक जोश में सावधानी रखें. धन एवं पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, राजनैतिक दायित्व आ सकते हैं.

कन्या- कार्यक्षेत्र की उलझने दूर होंगी, आय के साधन बढ़ेंगे धार्मिक प्रवास होगा, यातायात के साधनों में वृद्धि होगी. नवीन योजना बनेगी.

तुला- भाग्य के भरोसे रहे तो अच्छे अवसर गंवा देंगे, मनमौजी रवैया तरक्की में बाधक होगा, वाहन चलाते समय सावधानी रखें, चोट चपेट आदि से कष्ट होगा.

वृश्चिक- लोगों को अपनी बात समझाने का प्रयास, भावुकता पर नियंत्रण रखें, जमीन जायजाद प्रापर्टी आदि की प्राप्ति होगी, उच्च अध्ययन के लिये यात्रा होगी.

धनु- नई योजनाओं की शुरूआत में परेशानी होगी, उच्च अध्ययन के लिये यात्रा होगी, किसी पुराने व्यक्ति से काम की योजना बनेगी, धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी.

मकर- अधिकारी वर्ग का सहयोग प्राप्त होगा, आर्थिक योजनाओं में वृद्धि होगी, दूर दराज की यात्रा करना होगी, नवीन कार्य प्रारंभ होगा.

कुम्भ- विवादों केकारण कर्ज लेना पड़ सकता है, प्रतियोगी परीक्षा में सफ्लता मिलेगी, भावुकता केकारण दाम्पत्य जीवन में परेशानी हो सकती है.

मीन- जल्दबाजी में किये फैसले बदलने पड़ सकते हैं, नये संपर्कों से लाभ होगा, नियोजित कार्य पूरा होने से मन में हर्ष होगा, अतिथि आगमन होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

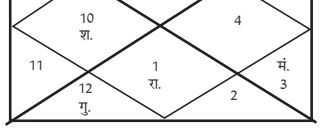

पंचांग

रा.मि. 15 संवत् 2082 चैत्र शुक्ल अष्टमीं शनिवासरे रात 12/5, आर्द्रा नक्षत्रे दिन 10/7, अतिगण्ड योगे रात 12/29, विष्टि करणे सू.उ. 5/49 सू.अ. 6/11, चन्द्रचार मिथुन रात 3/49 से कर्क, शु.रा. 3, 5, 6, 9, 10, 1 अ.रा. 4, 7, 8, 11, 12, 2 शुभांक- 5, 7, 1.

व्यापार भविष्य

चैत्र शुक्ल अष्टमीं को आर्द्रा नक्षत्र के प्रभाव से गुड़, खांड, नमक, चांवल, रूई, के भाव में चढ़ाव के साथ उतार आयेगा, जीरा, केभाव में स्थिति यथावत रहेगी, सोना, चांदी, के भाव में मंदी का योग है, भाग्यांक 2565 है.

SUDOKU 6995

2	9		3	1			8	
3	6		2		7		9	
		7			6		2	1
	7		1					
1	3			4			7	2
					5		4	
6	2		4			9		
	5		6		9		1	8
	1			5	3		6	4

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 6994

3	9	7	5	1	4	6	8	2
1	2	8	6	9	3	4	5	7
6	4	5	2	8	7	1	3	9
5	7	3	4	6	9	2	1	8
2	1	9	7	5	8	3	4	6
4	8	6	3	2	1	7	9	5
9	3	2	8	4	6	5	7	1
7	6	1	9	3	5	8	2	4
8	5	4	1	7	2	9	6	3